समाचार एवं विचार सेवा वार्षिक सहयोग राशि 25/–
महाकौशल–संदेश
वर्षः– 17 पृष्ठः– 4 अंक :– 38 संपादक :– डॉ. किशन कछवाहा
RNI No. MPHIN/2001/11140

यह सामग्री 'प्रकाशनार्थ' प्रेषित है। कृपया अपने लोकप्रिय पत्र–पत्रिका में प्रकाशित कर Complimentaryकापी प्रेषित करने की अनुकम्पा करें।

नल-नील की श्रेष्ठ अभियांत्रिकी कला का नमूना है श्रीराम सेतु

डॉ. किशन कछवाहा

श्रीराम चरित मानस के इस प्रसंग से जन–जन परिचित है,जब श्रीराम ने श्रीराम सेतु के निर्माण के पूर्व अपना धुनष उठा लिया था।गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज ने उस प्रसंग का वर्णन इन पंक्तियों में किया है :–

''विनय न मानत जलधि जड़, गये चार दिन बीत,बोले राम सकोप तब,भयबिन होई न प्रीति।।

'नासा' द्वारा लिये गये चित्रों में श्रीरामेश्वरम् और श्रीलंका के बीच मानव निर्मित सेतु के अस्तित्व की पुष्टि होती है,। सन् 1803 में प्रकाशित 'ग्लोसरी आफ मद्रास प्रेसीडेंसी (सी.डी मैक्लियोन द्वारा संपादित) के अनुसार इसे एडम्सब्रिज भी कहा जाता है। इसमें प्राप्त विवरण के अनुसार यह सेतु सन् 1480 तक भारतीय प्रायद्वीप को श्रीलंका से जोड़ता था। इस सेतु से लोगों का आवागमन होता था। उस समय आये भूकम्प से यह क्षतिग्रस्त हो गया। श्रीराम सेतु एक कालजयी एवं मानव सभ्यता की प्राचीन धरोहर है। इससे हिन्दूओं की अस्मिता, पहचान जुड़ी होने के साथ–साथ पूजनीय है। यह वैश्विक स्तर का स्मारक है। सन् 1747,1788,1804 के पश्चिमी नक्शों में श्रीराम सेतु के नाम से उल्लेख मिलता है। तंजौर स्थित आस्ट्रेलिया के वनस्पति शास्त्री यात्री द्वारा बनाया गया जो नक्शा उपलब्ध है उसमें 'रामारसेतु' लिखा हुआ है। सन् 1747 के नक्शे में रामन को बिल (श्रीराम का मंदिर) लिखा हुआ है) प्राचीन अभियांत्रिकी विधा का श्रेष्ठतम उदाहरण है श्री राम सेतु। बेजोड़ शिल्प कला का नमूना है। साथ ही रामायण कालीन नैतिक भौतिक एवं आध्यात्मिक शाक्तियों के अर्जित गुरूतर ज्ञान

का संकेतक भी है। इस श्रीराम सेतु से आस्था और इतिहास के मिलन की व्यापक सम्भावनायें है, भारतीयता को समर्पित लोगों ने श्रीरामसेतु से लेकर सरस्वती नदी शोघ अभियान के प्रयास शुरू किये हैं जिससे पश्चिम के विद्रानों द्वारा विज्ञान और इतिहास की सीमायें अपने आप ध्वस्त हो जावेंगी। यह स्पष्ट है कि भारतीय कालगणना का विशाल सागर पश्चिम के संकीर्ण धेरे में उपयुक्त सिद्ध नही हो सकता । पाश्चात्य विद्वानों द्वारा जो अवधारणायें गलत होने के बावजूद् थोपी हैं, उनकी कड़ियॉ स्वतः टूट जायेंगी, अब समय आ गया है जब सरस्वती से लेकर श्रीराम सेतु तक का पाश्चात्य इतिहास कारों का भारत के नजारिये के बारे मे जो भ्रम था, टूटता नजर आ रहा है अब आम लोगों को बतलाने की जरूरत है। कि अँग्रेजों द्वारा जो ऐतिहासिक चित्र भारत के बारे में खींचे गये थे, वे विकृत हैं। अमेरिका के एक साईन्स चैनल ने दावा किया है कि श्रीराम सेतु कोरी कल्पना नही है। इसके प्रमाण है कि भारत और श्रीलंका के बीच स्थित बलुई रेखा पर मौजुद पत्थर करीब सात हजार साल पुराने है। इससे इस मान्यता को बल मिलता है कि भगवान श्रीराम और उनकी वानर सेना ने श्रीलंका में प्रवेश करने के लिये इस सेतु का निर्माण किया था। इस चैनल ने अपने शोध–अध्ययन के आधार पर दावा किया है कि यह ढ़ॉचा प्राकृतिक नही वरन् मानव निर्मित है। इस क्षेत्र में समुद्र बेहद उथला है। समुद्र में इन चट्टानों की गहराई 3 फुट से लेकर 30 फुट के बीच है। पाश्चात्य एवं कम्युनिष्टों ने तर्क और तथ्य से विहीन रहकर इतिहास लेखन किया है। उन्होंने हमारी संस्कृति को तोड़–मरोड़ कर पेश करने की घृणित कोशिशें की हैं। उन्हें भारतीय संस्कृति और उसकी गौरव गाथाओं से कोई सरोकार नही है। इन इतिहास कारों ने इस बात का उल्लेख करने का साहस नही बटोरा कि इस देश को किसने लूटा ? आज परत–दर–परत खुलती चली जा रही हैं। अब विश्वभर के वैज्ञानिक एवं पुरातत्ववेता इस तथ्य से सहमत हैं कि श्रीराम सेतु मानव निर्मित है। वह रामायण कालीन है। तथा भारतीय मान्यता के अनुसार वह नल–नील की श्रेष्ठ अभियांत्रिकीय कला का श्रेष्ठ नमूना भी है। अभी हाल ही मे अमेरिकी पुरातत्व वेत्ताओं ने विज्ञान चैनल डिसकवरी में दिखलाये एक प्रदर्शन में एक ऐसा शोघ भी प्रस्तुत किया है। इस कार्यक्रम में अंतरिक्ष से नजर आने वाली एक तस्वीर भी दिखायी है। उल्लेखनीय है कि सोनिया कॉग्रेस के नेतृत्व वाली डॉ.मनमोहन सिंह सरकार के समय सेतु समुद्रम परियोजना के चलते श्रीरामसेतु और भगवान श्रीराम को मिथक कहते हुये सर्वोच्च न्यायालय में एक शपथ पत्र भी पेश किया गया था। इसी दौरान इस सेतु को तोड़ने का उपक्रम भी चलाया गया था जबकि इस प्रकार की धरोहरों को संरक्षित रखने की जरूरत है। इस सेतु का उल्लेख वाल्मीकि रामायण सहित स्कन्द पुराण, अग्नि पुराण, आदि में मिलता है।

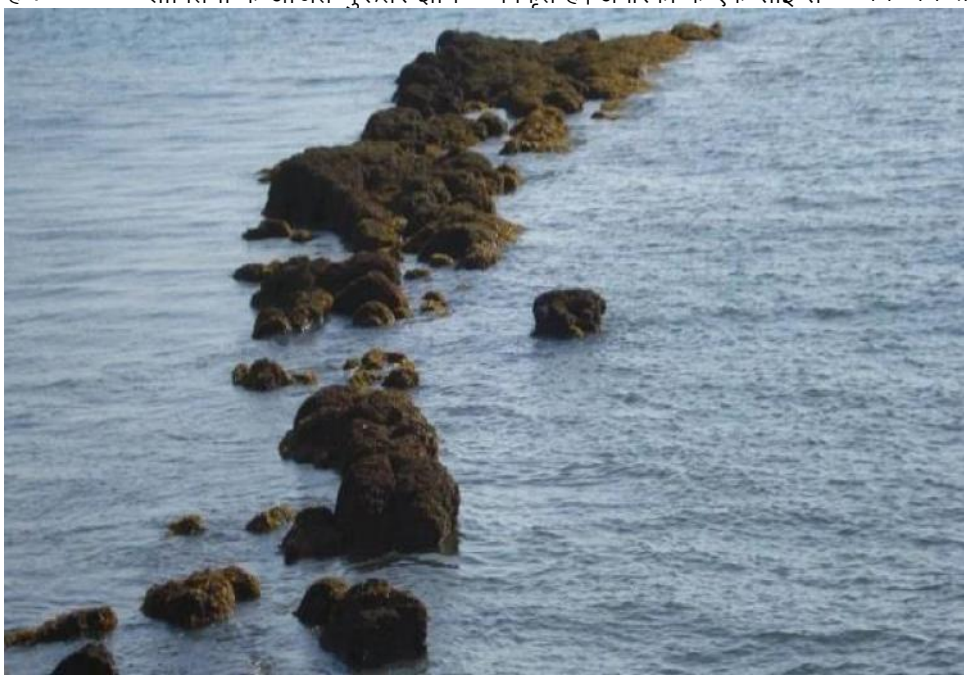

जाति व्यवस्था का मौलिक स्वरूप समाप्त हो गया है

❑ फ्रांक्वाँ गोशे

पश्चिमी विचारकों, पश्चिमी चिंतन से प्रभावित तथाकथित भारतीय बुद्धिजीवियों, सेकुलरवादी चिंतकों तथा वाममार्गी इतिहासकारों ने आर्यों के द्रविड़ों पर आक्रमण, वेदों के त्रुटिपूर्ण काल निर्धारण की तरह जो तीसरी मिथ्या अवधारणा थोपी है वह समाज में कार्य विभाजन की विलक्षण पद्धति जाति व्यवस्था भारतीय मानस की भ्रामक व्याख्या इस बौद्धिक छल ने भारतीय समाज को खण्ड–खण्ड विभाजित कर विभिन्न वर्गों को एक दूसरे के सामने आक्रामक मुद्रा में खड़ा कर भारत के समक्ष गहरी चुनौती प्रस्तुत कर दी है।

पश्चिमी इतिहासकारों, विचारकों एवं उन्हीं के सुर में सुर मिलाने वाले वामपंथी एवं सेकुलरवाद का लबादा ओढ़े भारतीय बुद्धिजीवियों ने आर्य–द्रविड़ विभाजन एवं वेदों के काल निर्धारण से भी अधिक जिस व्यवस्था को हदय से कोसते हुए उसकी मिथ्या तर्कहीन व्याख्या की है वह है जाति व्यवस्था। यदि कोई पूर्वाग्रह को तिलांजलि देकर जाति व्यवस्था का यथार्थपरक आकलन करना चाहे तो इसके मूल को वेदों से ढूंढना होगा।

कार्य विभाजन की विलक्षण पद्धति :– यूरोप की तरह ही भारत में भी जाति व्यवस्था वस्तुतः समाज के विभिन्न वर्गों के मध्य कार्य विभाजन के लिए प्रारम्भ की गई थी। किन्तु भारत में कार्य विभाजन का जो सिद्धांत प्रतिपादित किया गया वह अपने आप में विलक्षण था। एक व्यक्ति अपने ब्राह्मण परिवार में जन्म लेने के कारण ब्राह्मण नहीं था बल्कि उसे समाज के आध्यात्मिक एवं बौद्धिक उत्थान के दायित्व का निर्वहन करना होता था। उसे कठोर तपश्चर्या से अपने को संस्कारित कर आध्यात्मिक ऊँचाई प्राप्त करनी होती थी ताकि वह समाज के अन्य वर्गों में सम्मान प्राप्त कर सके। उसकी यह जीवन शैली कोई एक बार किया जाने वाला उपक्रम नही था, बल्कि सतत् जीवनचर्या थी।

क्षत्रिय भी किसी राज परिवार या योद्धा का पुत्र होने मात्र से क्षत्रिय नहीं बन जाता था। उसे समाज की सुरक्षा के लिए सदैव सन्नद्ध रहना होता था। पौरूष, शौर्य एवं अदम्य साहस उसके व्यक्तित्व के स्वाभाविक गुण होते थे। उसे अपनी प्रकृति की झलक अपने व्यवहार एवं आचरण से सदैव देनी होती थी। सच कहा जाये तो एक जुझारू व्यक्ति की पहचान जिस व्यक्ति में दिखाई देने मात्र से प्रकट हो वही क्षत्रिय कहलाने का हकदार होता था। इसी प्रकार वैश्य न केवल समाज के लिए धन अर्जन की कला में निपुण व्यक्ति होता था अपितु उसको पूरे समाज के भरण पोषण का दायित्व निभाना होता था। समाज का चौथा वर्ग जो शूद्र था वह समाज के वे सामान्य कार्य करता था जो समाज के शेष वर्ग अपने कर्तव्यों के पालन में व्यस्त रहने के कारण नहीं कर पाते थे। समाज का चौथा वर्ग समाज का आधार स्तम्भ या नींव का पत्थर था, जिस पर समाज का भव्य महालय अपने वैभव के साथ स्थित रहता था। समाज में कोई भी कार्य श्रेष्ठता–हीनता में वर्गीकृत नहीं था। वेदों से ज्ञात होता है कि एक ही परिवार के कई लोग अलग–अलग कार्य भी कर सकते थे। एक उल्लेख के अनुसार परिवार का मुखिया कविता करता है तो माँ पिसनहारी है एवं पुत्र कृषि कार्य में संलग्न।

जातिप्रथा का मूल आधार

भारत एवं भारतीयता के बारे में गहरी समझ रखने वाले महान् चिंतक एवं स्वप्न–दृष्टा महर्षि अरविन्द इस मत से सहमत हैं। उनके अतिरिक्त ऐसे अनेक ऋषियों ने इस वास्तविकता को प्रतिपादित किया है। उनमें से कुछ का तो कथन है कि भारतीयों का दैवीय शक्तियों के साथ ब्रहमाण्डीय सम्पर्क था। व्यक्ति अपने पूर्वजन्म में किये आध्यात्मिक विकास के अनुरूप ही जन्म लेता था। पर सत्य यह है कि जब तक भौतिकतावाद की सनक एवं पश्चिमी चिंतन की छाप भारतीय मनीषा पर नही हुई उक्त व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रही।

पुनरावलोकन की प्रांसगिकता

भारतीय मनीषा ने अपने जन्म से आज तक अनेक उतार–चढ़ाव देखे हैं। समय–समय पर यह अपनी श्रेष्ठता एवं उपादेयता बखूबी प्रमाणित करती रही है। किन्तु काल एंव परिस्थितियों में आये बदलाव के कारण प्रश्न उठने लगे है कि क्या कोई इस सिद्धान्त को अब भी अक्षरशः स्वीकार कर सकता है ? यह भारत के उस कालखण्ड में स्वीकार्य हो सकती थी जब भारत के लोगों को अपने अंतर की सच्चाई से साक्षात्कार होता था। कालान्तर मे मानव की लोभ एवं स्वार्थ की स्वाभाविक प्रवृत्तियो ने संभवतः इसे प्रदूषित कर दिया है। महर्षि अरविन्द ने सिद्धान्त रूप में जाति व्यवस्था के मौलिक स्वरूप का समर्थन किया है। किन्तु इसके स्वरूप में आई विकृति को उन्होंने उचित नही माना है। उनका स्पष्ट मत है कि मानव संस्थाओं का पतन होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और जाति व्यवस्था भी इसमें अपवाद नहीं है। अपने वर्तमान स्वरूप में जाति व्यवस्था भी विकृत रूप में है। आध्यात्मिकता जो इसकी अनिवार्य पात्रता थी आज इसके निर्धारण का मापदण्ड नही रह गई है। जाति अब केवल भौतिक आधार व्यवसाय एवं जन्म के आधार पर निर्धारित होने लगी है। वस्तुतः यह परिवर्तन उसे हिन्दू धर्म के मूल सिद्धांत आध्यात्मिकता से दूर कर देता है। यह भौतिकतावाद के क्षुद्र जाल में जकड़ गई है। इसका वास्तविक स्वरूप लुप्त हो गया है। जातीय –अंहकार तथा अलगाव की प्रवृत्ति हावी हो गई है। इसकी पहचान अब कर्तव्य पालन न होकर जातीय श्रेष्ठता–हीनता रह गई है। समाज के विभिन्न वर्ग एक दूसरे से कटने लगे है। गैर हिन्दू धर्मावलम्बी इसका लाभ उठाकर इन्हें सनातन धर्म के विरूद्ध उकसा कर अपनी ओर आकर्षित करने लगे हैं। मतान्तरण के सुनियोजित प्रयास हो रहे हैं। इससे समाज निर्बल हो गया है। हमारी वर्तमान अवस्था इस विकृति का ही परिणाम है।

सेकुलरों पर अंकुश लगायें

लेकिन अंततः अब विचारणीय है कि वे लोग जो जाति व्यवस्था में द्रविड़ों पर आर्यों के द्वारा थोपी गई व्यवस्था या अमानवीय नाजीवाद का स्वरूप ढूंढते है, ने क्या इसके वास्तविक उद्देश्य एवं

शेष पृष्ठ क्रमांक 4 पर

जो भी हो, हिन्दुओं को जाति प्रथा को अपने विरूद्ध शर्मनाक तरीके से शोषण के हथियार के रूप में प्रयुक्त करने की अनुमति किसी को भी नहीं देनी चाहिये। गत दो शताब्दियों से मिशनरियों, कथित धर्मनिरपेक्ष बुद्धिजीवियों, मुसलमानों एवं भारत की आजादी से पूर्व एवं पश्चातवर्ती राजनेताओं के द्वारा अपने स्वार्थ के लिए इसको राजनैतिक खेल के रूप में खेलने की प्रवृत्ति पर तो अंकुश लगना ही चाहिये।

देश में लहराता भाजपा का परचम

देश के 29 में से 12 राज्य ऐसे है जहॉ कॉग्रेस सत्ता से 14 से लेकर 50 सालों से दूर है। वही भाजपा ने गत 25 वर्षो मे भाजपा ने देश के 14 राज्यों में अपनी सरकारें बना ली है तथा अपने सहयोगियों की मदद से पॉच राज्यों में सरकार बनाने में सफला हो चुकी है। इसी चुनाव में 22 साल से गुजरात में भाजपा सत्ता पर काबिज है। उसके गढ़ में सेन्ध मले ही कॉग्रेस लगाने में सफल हो गयी हो ऐसा मानकर खुशफहमी पाल ली जाय लेकिन कॉग्रेस उसे सत्ता से हटा पाने में पूरी तरह असफल रही है। दूसरी तरफ भाजपा हिमाचल प्रदेश में कॉग्रेस को सत्ता से बेदखल करने में सफल हो चुकी है। इस तरह कॉग्रेस गत 67 वर्षो में 24 राज्यों की सत्ता गॅवा चुकी है। अब उसके पास 5 राज्य बचे रह गये है। इसके उलट भाजपा अपनी सांगठनिक क्षमता के आधार पर 19 राज्यों में जीत हासिल कर चुकी है। मोदी जी ने अपने कार्यकाल के तीन वर्षो में 18 में से 12 चुनावों में सफलता दिलाकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

वे सशक्त, प्रभावी एवं चमत्कारी प्रधानमंत्री के रूप मे सामने आये है। इन दो राज्यों की जीत ने भाजपा का हौसला और भी अधिक बढ़ा दिया है। कहा जा सकता है कि भाजपा का जादू बरकरार है, कॉग्रेस अब देश के मात्र पॉच राज्यों तक सिमटकर रह गयी है। चुनाव परिणाम अप्रत्याशित नही थे। सिवाय इसके कि भाजपा को गुजरात में कुछ सीटें कम मिली। यदि कॉग्रेस हिमाचल में अपनी सत्ता बचा लेती तो जरूर एक चमत्कार हो जाता। गुजरात में कॉग्रेस की जीत का सवाल ही नही उठता। भाजपा ने गुजरात में छठीबार अपनी सरकार बनायी है। उसने मुश्किलों भरे दौर को हौसले के साथ पार किया है। यह माना जाना चाहिये कि भाजपा के अच्छे प्रशासन और विकास को गुजरात की जनता से आखिरकार पसन्द ही किया है। अपनी खामियों को सुधारकर अब और ऊॅचाइयों पर ले जाया जायगा। इस चुनाव ने कमोवेश यह सिद्ध कर दिया है कि श्री मोदी के नेतृत्व में गुजरात ने तेजी के साथ तरकी की राह पकड़ी है। राजनैतिक विश्लेकण भी अपने अपने चश्में से इस जीत हार को देखते हैं। भाजपा 22 सालों से गुजरात पर शासन कर रही है,इसके बावजूद् वह अपना किला बचा ले जाने में सफल रही हैं। वही 22 सालों से कॉग्रेस शासन विरोधी हवा को अपने पक्ष में करने में असफल रही है। नोट बंदी जी. एस.टी का व जातिवादी हौआ खड़ा करने के बावजूद् वह सत्ता के शिखर पर पहुॅचने में नाकाम रही है। आने वाले कर्नाटक फिर राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ सहित आठ राज्यों में क्या ये चुनाव परिणाम असर नही डालेंगे ?

लोकप्रियता के शिखर पर पहुँची कबड्डी

कबड्डी विशुद्ध रुप से भारतीय खेल है। भारत में ही ऐसे खेल विकसित हुए जिनको साधनहीन एवं निर्धन व्यक्ति भी खेल सकें। कबड्डी खो–खो आदि सभी खेल ऐसे हैं जिनके लिये एकमात्र आवश्यकता जमीन के एक आयताकार टुकड़े की होती है जो गॉव – गॉव में आसानी से उपलब्ध हैं। कबड्डी तो पुनर्जन्म के सिद्धांत पर भी आधारित है। हमारे ये सभी खेल ऐसे हैं जिनमें शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक क्षमताओं का पूरा विकास होता है। क्रिकेट की आँधी ने हमारी मिट्टी से जुड़े खेलों सहित फुटबाल, हॉकी, वॉलीबाल आदि को भी पीछे धकेल दिया। संघ की शाखाओं ने खो – खो और कबड्डी को जीवित रखा। कबड्डी फेडरेशन ने भी कबड्डी को प्रासंगिक बनाये रखा। कबड्डी को फिर से ऊँचाइयों तक पहुँचाने का पहला प्रयास 2012 में हुआ जब आठ टीमों के बीच विजयवाड़ा में **कबड्डी प्रीमियर लीग** प्रतियोगता हुई। यह 8 से 16 जून तक कुल मिलाकर नौ दिन चली। 2014 में **कबड्डी प्रीमियर लीग** शुरू हुई जो पॉच सप्ताह तक चली। इसमें भी आठ दल थे, जिनमें भारत व अन्य देशों के नामी खिलाड़ी खेले।

इस लीग के चार संस्करणों तक टीमें आठ ही रही किन्तु इस बार प्रो कबड्डी के पाँचवें संस्करण में टीम भी बारह हो गईं तथा मुकाबलों की संख्या भी दो गुनी से अधिक हो गई। भारत के बाहर लगभग 120 देशों में दूरदर्शन पर सभी मुकाबले दिखाये गये। इस पंचम संस्करण ने कबड्डी को लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचा दिया। पूरे तीन महीने तक चली इस लीग में शानदार कबड्डी देखने को मिली। पटना पायरेट्स की प्रदीप नरवाल की अगुवाई वाली टीम ने लगातार तीसरी बार विजेता की ट्राफी पर कब्जा किया।

पी. के. एल.–5 में बारह दलों के मुकाबलों के अतिरिक्त स्कूली बालकों की प्रतियोगिता भी हुई। जयपुर सहित बारह नगरों के स्कुलों ने इसमें सहभागिता की।

हिन्दु दमन का इतिहास

वामपंथी इतिहासकारों ने अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल में हिन्दुओं पर किये गये जुल्मों की घटनाओं को न केवल छिपाया है, वरन् उसके शासन काल को उसके कृकत्यों पर पर्दा डालते हुये महिमामण्डित किया है। दिल्ली सल्तनत का लगभग 250 वर्षो का मध्यकालीन इतिहास सामान्य जनों,महिलाओं और बच्चों के लिये क्रूरता, दमन और अत्याचारों से भरपूर रहा है। उस क्रूर एवं अत्याचारी शासक के आक्रमण के समय दुर्ग में घिरी महिलाओं द्वारा जौहर(सामूहिक रूप से अग्नि में जल कर मर जाना) के घटनाक्रम कपोल–कल्पित बतलाया गया है। अलाउद्दीन की क्रूरता इसी से पता चल जाता है कि उसने अपने चाचा और ससुर को सुल्तान जलाउद्दीन तक को धोखे से मार डाला था। वह भी सत्ता हासिल करने के लालच में। रानी पद्मावती को लेकर चितौड के जौहर को इतिहास से परे घटना बतलाना इतिहास लिखने वालों की विकृत मानसिकता को दर्शाती है।

पृष्ठ क्रं. 2 का शेष भाग

प्रकृति को जानने का प्रयास किया है ? क्या आप इसे एकदम नकार सकते है ? जबकि अभी भी यह भारत के आम नागरिक के दिल और दिमाग में गहरे से बैठी हुई है भारत के ग्रामीण अंचल मे तो इसे नकारना और भी दुष्कर है। इतना ही नहीं शहरी एवं पढ़े लिखे सुशिक्षित लोग भी अपना वैवाहिक सम्बन्ध ज्योतिषियों के परामर्श से बनाना उचित समझते हैं। पर यह प्रश्न आज के तर्कप्रधान युग में निश्चय ही विचारणीय है कि क्या अब इस जाति व्यवस्था में इसकी मौलिक उदात्तता लाने की आवश्यकता नहीं है ? या फिर इसे आधुनिक समाज की जरूरत को देखते हुए नये स्वरूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिये। या अन्ततः अंतिम रूप से यह भारतीय समाज से अदृश्य हो जायेगी, क्योंकि आज इसकी कोई प्रांसगिकता नहीं रह गई है ? जो भी हो, हिन्दूओं को जाति प्रथा को अपने विरूद्ध शर्मनाक तरीके से शोषण के हथियार के रूप में प्रयुक्त करने की अनुमति किसी सेकुलर बुद्धिजीवियों, मुसलमानों एवं भारत की आजादी से पूर्व एवं पश्चावर्ती राजनेताओं के द्वारा अपने स्वार्थ के लिए इसको राजनैतिक खेल के रूप में खेलने की प्रवृत्ति पर तो अंकुश लगना ही चाहिए।

तुष्टीकरण के लिये हिन्दू- आतंक का षड़यंत्र रचा गया

हिन्दू समाज और 'हिन्दूत्व' को बदनाम करने के लिये सेकुलरवादी कैसे–कैसे षड़यंत्र करते हैं, इसकी जानकारी धीरे–धीरे होने लगी है। हिन्दूत्व पर कीचड़ उछालने का प्रमुख उद्देश्य तो मुसलमानों के एक – मुश्त वोट प्राप्त करना है, लेकिन साथ ही इसमें अन्तर्राष्ट्रीय ताकतों की भी भूमिका है। कतिपय विदेशी ताकतों के दबाव में **'हिन्दू–आतंक'** शब्द गढ़ा गया और उसके लिए जाली सबूत भी जुटाये गये। हाल ही में जमानत पर छूटे सुधाकर चतुर्वेदी ने पिछली संप्रग सरकार के कारनामों का खुलासा किया है। 8 सित. 2006 को नासिक जिले के मालेगाँव में सिलसिलेवार बम धमाके हुए थे। इन धमाकों के आरोप में कुछ मुस्लिम कटटरपंथियों को पकड़ा गया और उन पर मुकदमा शुरू हो गया। दो साल बाद 26 सितम्बर 2008 के दिन मालेगॉव में ही फिर एक बम धमाका हुआ जिसमें सात लोग मारे गये। इसके बाद 'हिन्दू आतंक' का शोर मचाने का षड़यंत्र रचा गया और अक्टूबर में कर्नल पुरोहित तथा साध्वी प्रज्ञा ठाकुर सहित कई निर्दोष लोगों को महाराष्ट्र के आतंकरोधी दस्ते (ए टी एस) ने गिरफ्तार कर लिया। इसमें देवलाली (नासिक) के सुधाकर चतुर्वेदी भी थे। बाद में स्वामी असीमानन्द जी को भी बन्दी बना लिया गया। नौ साल जेल में बिताने के बाद अब लगभग सभी निदोर्षो को जमानत पर छोड़ दिया गया है। दिवाली के पहले रिहा हुए सुधाकर चतुर्वेदी ने पत्रकारों को बताया कि तत्कालीन सरकार ने हिन्दूत्व और राष्ट्रवादी नेताओं को कलंकित करने का जी–तोड़ प्रयत्न किया था। कर्नल पुरोहित तथा साध्वी प्रज्ञा सहित सभी बन्दी निर्दोषों को ऐसी यातनाएं दी गई जो कल्पना से भी बाहर हैं। सरसंघचालक भागवत जी तथा योगी आदित्यनाथ का धमाकों मे हाथ होने का बयान देने के लिए इन पर जबर्दस्त दबाव डाला गाया। सुधाकर के देवलाली स्थित घर पर ए टी टी एस के षड़यंत्रकारियों ने विस्फोटक रख दिये। बाद में प्राथमिकी में घर पर विस्फोट मिलने का आरोप भी जड़ दिया गया। उनके पास से पिस्तौल बरामद होने का झूठा आरोप भी मढ़ा गया। दस दिनों तक भीषण यातनायें देने के बाद 26 अक्टू. 2008 के दिन उनको गिरफ्तार दिखाया गया।

गरीबों की चिंता में करोड़पति बन गये नक्सली

नक्सलवादी भारत के सेकुरल लिबरल – नक्सल गठजोड का हिस्सा है और पूरे गठजोड़ की तरह घोर पाखण्डी है। भारत राज्य के विरूद्ध युद्ध की घोषणा के कारण देश द्रोही तो वे है ही। नक्सली और उनके भाइ–बन्द वनवासियों के शोषण,उनकी दयनीय स्थिति, उन पर अत्याचार आदि की बाते खूब बघारते है किन्तु वनवासियों के सब प्रकार के शोषण में वे सबसे आगे है। गरीब वनवासियें की चिंता में नक्सली सरगना करोडपति बन गये है। दैनिक टाइम्स ऑफ इण्डिया में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार बिहार–झारखण्ड के दो माओवादी नेता संदीप यादव तथा प्रद्युम्मन शर्मा करोडेंके मालिक है तथा उनके बाल–बच्चे शाही जीवन व्यतीत करते है। सारी संपत्ती वनवासियों से उगाही कर बनायी गई है। इन माओवादी के बच्चे ऐसी संस्थाओं में पढ़ते है कि जिनकी सामान्य व्यक्ति देख भी नही सकता। मॅहंगी गाडी और आधुनिक गाड़ियों में ये बच्चे उक्त संस्थाओं में पढने जाते है। आत्म समर्पण करने वाले नक्सलियों ने इस समस्या पर ऐसे ही आरोप लगाये है। जबर्दस्त भ्रष्टाचार और देह–शोषण के ढेरो उदाहरण

कटास राज मंदिर से मूर्तियाँ गायब

पाकिस्तान स्थित प्रख्यात कटांस राज मंदिर से भगवान श्री राम और पवनसुत हनुमान की मूर्तियॉ गायव हो गयी है।मंदिरों में राम,शिव और हनुमान की मूर्तिया न होने पर स्थानीय हिन्दुओं में भारी रोष व्याप्त है। इस मामले में पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने नाराजगी व्यक्त की है। अपनी नाराजगी व्यक्त करते हुये प्रशासन ने यह भी पूछा है कि प्रशासन इस मामले में क्यो लापरवाही वरत रहा है ? इस मंदिर में पाकिस्तान और भारत के अलावा दुनियाभर के हिन्दु समुदाय के लोग धार्मिक रस्म अदा करने यहां आते है। अगर मंदिरों में मूर्तिया नही होंगी तो पाकिस्तान में रह रहे अल्पसंख्यक हिन्दुओं के बारे में क्या धारणा बनेगी ?

सूचना

कृपया आप ~~अपना ई~~–मेल एवं मोबाइल नम्बर महाकौशल संदेश के ई मेल पर भेजने का कष्ट करें ताकि 'महाकोशल संदेश' आपको ईमेल पर प्रेषित किया जा सके । – सम्पादक

प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. किशन कछवाहा द्वारा विश्व संवाद केन्द्र, महाकोशल, प्लाट नं–1, म.नं. 1692, नवआदर्श कालोनी, के लिये ओम आफसेट प्रिन्टर्स 239, यूनियन बैंक के सामने बल्देवबाग चौक, जबलपुर द्वारा मुद्रित। प्रकाशन स्थान–विश्व संवाद केन्द्र प्लाट नं 1, म.नं. 1692 नवआदर्श कॉलोनी गढ़ा मार्ग जबलपुर मध्यप्रदेश । संपादक– डॉ. किशन कछवाहा
Email:- vskjbp@gmail.com kishan_kachhwaha@rediffmail.com